Vol 4 Issue 7 April 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

# Review Of Research Journal

Chief Editors

**Ashok Yakkaldevi**
**A R Burla College, India**

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

**Welcome to Review Of Research**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org**

Review Of Research ISSN : 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume-4 | Issue-7 | April-2015 Available online at www.ror.isrj.org

# भारत का बदलता परिवेश :बदलती युवा जीवनशैली

यतेन्द्र कुमारी
Research Scholor , Education, Banasthali University .

## Short Profile

Yatendra Kumari is a Research Scholor, Education in Banasthali University. She has Completed B.A., B.Ed., M.Ed., M.A. and Ph.D

## Co-Author Details :

कविता मित्तल
Associate Professor , Education Banasthali University.

**सारांश**

भारत में लगातार किशोरों की जीवनशैली बदलती दुनिया के साथ–साथ नया मोड़ ले रही है। वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण तथा पश्चिमीकरण समाज कीआवश्यकताओं को बदल रहे हैं, जिससे जागरूक होकर युवा पीढ़ी और अधिक महत्वाकांक्षी बन रही है, जिसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव किशोरों की जीवनशैली पर पड़ रहा है। एक व्यक्ति जिस तरह से जीवन जीता है, उसका सीधा प्रभाव उसकी योग्यताओं सवं क्षमताओं पर पड़ता है जिसके आधार पर ही वह जीवन में सफलता व संतुष्टि प्राप्त करता है। अक्सर देखा जाता है कि विद्यार्थी जिस प्रकार की शैली को अपनाता है वह उसकी संस्कृति, लिंग, पारिवारिक, पृष्ठभूमि आदि से प्रभावित होती है।

## प्रस्तावना

अत्यन्त पुरानी कहावत है कि आज का बालक कल का भविष्य होता है परन्तु वह आज का वर्तमान भी है व कल का भविष्य भी है। जीवन की परिस्थितियाँ, आवश्यकताएँ व प्राथमिकताएँ सदैव परिवर्तित होती रहती है और यह परिवर्तन प्रत्येक अवस्था पर लागू होता है, जिसमें सर्वाधिक संवेदनशील कही जाने वाली किशोरावस्था के लिए परिवर्तन की प्रक्रिया अत्यन्त प्रभावपूर्ण होती है।परिवर्तन की प्रक्रिया किशोरों की आवश्यकताओं व प्राथमिकताओं दोनों में बदलाव लाती है जैसे आज से दो दशक पूर्व किशोर संवाद के लिए प्रत्यक्ष मुलाकात का उपयोग करते थे परन्तु अब इसका स्थान सोशियल नेटवर्किंग वेबसाइट्स ने ले लिया है इतना ही नहीं वर्तमान में किशोर परिवार में रहते हुए अपने अभिभावकों से भी संवाद हेतु मोबाईल को प्रयुक्त करते हैं। उनके व्यवहार, आदतें व दृष्टिकोण सामाजिक परिवर्तनों के कारणरूपान्तरित हो रहे हैं। आज किशोरों को भी युवाओं का दर्जा दिया जा रहा है जिससे उनकी भूमिकाओं में कुछ परिवर्तन अवश्य आ रहे है। ऐसे में उनके जीवन जीने के ढंग में परिवर्तन महसूस किया जा सकता है।

साधारण शब्दों में व्यक्ति क्या खाता है? क्या पहनता है? क्या खेलता है? किनके साथ रहता है? कब, कितना व कैसे पढ़ता है? उसकी क्या आदतें हैं? उसकी पसंद–नापसंद क्या हैं एवं इनके प्रति उसके विचार क्या हैं? ये सभी बातें व्यक्ति की जीवन शैली को दर्शाते हैं।

जीवनशैली शब्द का सर्वप्रथम उपयोग प्रसिद्ध ऑस्ट्रियन मनोविश्लेषणवादी मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड ऐडलर (1870–1937) द्वारा किया गया। जीवनशैली अंग्रेजी के दो शब्दों स्पमितथा Stylels मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है जीवन को आगे बढ़ाना ('Way' one leads his/her life)

डिक्शनरी रेफरेंस.कॉम के अनुसार –''आदतें, दृष्टिकोण, पसंद, नैतिक–मूल्य, आर्थिक स्तर आदि मिलकर किसी व्यक्ति या समूह की जीवनशैली का निर्माण करते हैं।''

बिजनिस डिक्शनरी.कॉम के अनुसार–''किसी भी व्यक्ति का परिवार तथा समाज में रहने या जीवन जीने का वह ढंग जिसमें वह अपने शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा आर्थिक वातावरण के साथ दैनिक आधार पर समन्वय स्थापित करने की कोशिश करता है, जीवनशैली कहलाता है।''

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर जीवनशैली की कुछ विशेषतायें उभर कर सामने आती हैं जो इस प्रकार हैं – जीवनशैली की विशेषताएँ –

01.व्यक्ति की आदतों, व्यवहारों, विचारों के समन्वयक रूप को जीवन शैली कहते हैं।
02.औपचारिक व अनौपचारिक अधिगम द्वारा जीवनशैली का निर्माण होता है।
03.व्यक्तियों की जीवनशैली में भिन्नता होती है।
04.जीवनशैली परिवर्तनशील प्रत्यय है क्योंकि इसे अर्जित किया जाता है इसलिए व्यक्ति या समूह के बदलते विचारों, क्रियाकलापों से जीवनशैली भी बदल जाती है।
05.किशोरों की जीवनशैली में सबसे अधिक परिवर्तनशीलता पायी जाती है।
06.जीवनशैली अवलोकनीय है, अतः इसे पहचाना जा सकता है।
07.जब समाज के अधिकांश व्यक्ति एक सी ही जीवनशैली को अपना लेते हैं तब समाज एक विशिष्ट रूप ले लेता है।
08.संस्कृति, परिवार तथा संदर्भ समूह व्यक्ति की जीवनशैली को प्रभावित करते हैं साथ ही साथ आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, वैश्वीकरण, वृहत स्तर पर जीवनशैली को परिवर्तित करते हैं।
09.सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व भौतिक परिवर्तन से जीवनशैली परिवर्तित होती है साथ ही परिवर्तित जीवनशैली समाज में परिवर्तन भी लाती है।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के द्वारा सामाजिक वातावरण में व्यक्तियों के बदलते क्रियाकलापों एवं व्यवहारों के अवलोकन एवं जीवन शैली से सम्बन्धित किए गए अध्ययनों द्वारा कई विशिष्ट जीवन शैलियों को पहचाना गया है जिन्हें प्रमुखतः छः वर्गों में निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया है–

1.स्वास्थ्य केन्द्रित जीवनशैली (Health Conscious Lifestyle) स्वास्थ्य केन्द्रितजीवनशैली से तात्पर्य जब व्यक्ति सदैव स्वयं को शारीरिक रूप से हृष्ट–पुष्ट रखने के लिए विचारशील होता है। शारीरिक स्वस्थता, पोषक पूर्णता, रोगमुक्तता, आकर्षक शरीर पर दृष्टिकोण रहता है।

2.अकादमिक उन्मुख जीवनशैली (Academic Oriented Lifestyle)% इस प्रकार की जीवनशैली में व्यक्ति अधिकांशतः अपनी अकादमिक क्रियाओं में संलग्न रहता है।

3.व्यवसाय उन्मुख जीवनशैली (Career Oriented Lifestyle) किसी भी व्यक्ति को व्यवसाय उन्मुखी तब कहा जाता हैं जब वह सदैव अपने व्यवसाय के बारे में अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करने हेतु जिज्ञासू रहता है।

4. परिवार उन्मुख जीवनशैली (Family Oriented Lifestyle) वह व्यक्ति जो प्रमुखरूप से अपने परिवार के संग संपर्क में रहता है एवं अपनी दैनिक जीवन से जुड़ी क्रियाओं को अपने परिवारके साथ बांटता है परिवार उन्मुख जीवनशैली वाला कहलाता है।

5.सामाजिक उन्मुख जीवनशैली (Socially Oriented Lifestyle) जब व्यक्ति हमेशा समाज के लिए भलाई करता है व सामाजिक क्रियाओं में भाग लेता है।

6.चलन सम्बन्धी जीवनशैली (Trend Seeking Lifestyle)जब व्यक्ति सदैव नवीन चलन को अपनाता है व बदलते चलन के अनुसार अपने आप को शीघ्रता से बदलता है।

जीवनशैली में व्यक्तिशः भिन्नताएँ होती हैं जिसमें व्यक्ति की दैनिक जीवन से जुड़ी विशिष्ट क्रियायें तथा वातावरण का प्रभाव शामिल होता है, जीवनशैली का निर्माण निम्न तत्वों से होता है :–

01.आदतें – किसी व्यक्ति का लंबे समय तक किया गया एक जैसा व्यवहार या कार्य उनकी आदत है जो उसकी विशिष्ट प्रकार की जीवनशैली को निर्मित करते हैं। खान–पान तथा पारिवारिक स्वास्थ्य, सफाई, व्यवस्थित होना, नियमितता जैसी अच्छी आदतों से लेकर धूम्रपान व मादक पदार्थों का सेवन जैसी बुरी आदतों तक सभी जीवनशैली की ही छवि हैं।

02.अकादमिक जीवन एवं करियर– आज का शैक्षिक जीवन केवल विषयों या पाठ्यक्रमों की पढ़ाई तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि अनेक पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ भी जुड़ गई हैं जिसे भी शैक्षिक या अकादमिक जीवन का ही अंग माना जाता है, जैसे–कम्प्यूटर, तैराकी, खेल, आभूषण, सज्जा, फैशन डिजाइनिंग आदि भी बालक की जीवनशैली को प्रदर्शित करते हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति जिस करियर या रोजगार के अवसर को प्राप्त करता है, वह उसकी जीवनशैली को परिभाषित करते हैं।

03.वित्तीय साधन– इस तत्व को भले ही जीवनशैली का अनिवार्य रूप नहीं माना गया, फिर भी वित्तीय साधन व्यक्ति के जीवन जीने के तरीके को काफी हद तक प्रभावित करते हैं।

04.सांवेगिकता– जीवनशैली मन की स्थिति भी है जब शांति व संतुष्टि व्यक्ति के दैनिक जीवन का भाग बन जाते हैं तब एक स्वस्थ व खुशहाल जीवनशैली में समृद्धि मायने नहीं रखती।

05.तकनीकी प्रयोग– आज शिक्षा, तकनीकी बदलाव के कारण बदल रही है। डिजिटल एरा से पहले शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया केवल कक्षा में आमने सामने ही संभव थी परंतु अब इंटरनेट के माध्यम से इसमें बदलाव आ रहा है, जिससे शिक्षा विद्यार्थी केन्द्रित हो गई है।

06.आध्यात्मिक व सामाजिक जीवन– आध्यात्मिकता भी जीवनशैली का महत्वपूर्ण तत्व है। आज आध्यात्मिकता व्यक्ति के जीवन से समाप्त नहीं हुई, केवल इसका रूप परिवर्तन हुआ है। आज के विद्यार्थियों भी हाथ में धार्मिक कड़े, अंगूठी, माला, ईश्वर के चित्र वाली टी–शर्ट आदि पहने नजर आ जाते हैं, जो उनके जीवन में आध्यात्म में विश्वास को इंगित करता है।

इसी प्रकार अपनी इच्छा से नेतृत्व में आना किशोरों के सकारात्मक सामाजिक पक्ष को इंगित करता है। किशोर द्वारा अर्जित कौशल व विशिष्टि ज्ञान से समाज के विकास को प्रगति मिलती है।

07.फैशन व मनोरंजन– फैशन व मनोरंजन भी जीवनशैली को प्रदर्शित करते हैं। कॉलेज के साथ–साथ अब विद्यालयों में भी मिमिकरी, न्यूज हंट, फोटोग्राफी, रेडियाप्रोग्राम, खेल, कैट–वॉक, नृत्य, फैशन शो, एक्टिंग आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जिससे विद्यार्थी नवीन प्रचलन के बारे में जानते हैं।

किशोर विद्यार्थी अपने मनोरंजन में सिनेमा, पब, स्पोर्ट्स हाउस/क्लब में जाना भी शामिल करते हैं। इसके अलावा रिएलिटी शो देखना, रेडियो एफ.एम. सुनना आदि भी मनोरंजन के ही साधन हैं।

08.स्वास्थ्य– वातावरण, खानपान से भी जीवनशैली परिवर्तित हो रही है। विद्यालय में लंच न लाना अब आम बात है। कैंटीन में खाने का प्रचलन बढ़ रहा है, जिसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर पड़ता है।

09.संप्रेषण– संप्रेषण भी जीवनशैली का अभिन्न अंग है, मोबाइल, इंटरनेट पर चैटिंग चलन बन गया है, जिससे बच्चों में लेखन व बोलने दोनों की भाषा में बदलाव आने लगा है तथा संपर्क के माध्यम बदल रहे हैं।

10.अभिवृत्तियाँ– जीवनशैली का निर्माण अनेक गुणों से मिलकर होता है, जिनमें से एक गुण अभिवृत्ति है। व्यक्ति के किसी

के प्रति दृष्टिकोण से जीवन शैली पर भी प्रभाव पड़ता है। अभिवृत्ति से ही व्यक्ति किसी भी वस्तु के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक रूप से व्यवहार करता है।

भारत में 22 प्रतिशत जनसंख्या 10 से 19 वर्ष के किशोरों की है जो मानव संसाधन के रूप में प्रदर्शित किए जाते है। आगे भविष्य में क्या होगा इसका अधिकतर भाग किशोरों या युवाओं द्वारा लिए गए निर्णयों पर निर्भर करता है। भारत में लगातार किशोरों की जीवनशैली बदलती दुनिया के साथ–साथ नया मोड़ ले रही है। वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण तथा पश्चिमीकरण समाज की आवश्यकताओं को बदल रहे हैं, जिससे जागरूक होकर युवा पीढ़ी और अधिक महत्वाकांक्षी बन रही है, जिसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव किशोरों की जीवनशैली पर पड़ रहा है। एक व्यक्ति जिस तरह से जीवन जीता है, उसका सीधा प्रभाव उसकी योग्यताओं एवं क्षमताओं पर पड़ता है जिसके आधार पर ही वह जीवन में सफलता व संतुष्टि प्राप्त करता है। अक्सर देखा जाता है कि विद्यार्थी जिस प्रकार की शैली को अपनाता है वह उसकी संस्कृति, लिंग, पारिवारिक पृष्ठभूमि व सामाजिक परिवेश आदि से प्रभावित होती है।

## *भारत में युवाओं की बदलती जीवनशैली–*

शिक्षा एवं जीवन शैली प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में एक दूसरे से सम्बन्धित है, जैसे– एक बालक अच्छे स्वास्थ्य स्तर के साथ ही नियमित रूप से विद्यालय जा सकता है व अकादमिक क्रियाओं को बेहतर ढंग से कर सकता है। विपरीत स्थिति होने पर उसका सीधा प्रभाव उसके अकादमिक प्रदर्शन पर पड़ेगा। इसी प्रकार बालक की पारिवारिक पृष्ठभूमि भी उसके विद्यालयी गतिविधियों पर असर डालती है। शिक्षा भी जीवन शैली को बेहतर बनाने में सहायक होती है। शिक्षित व्यक्ति का दृष्टिकोण अधिक खुला रहता है। वह भविष्य में बेहतर व्यवसाय की ओर प्रवेश करता है। समाज में भी शिक्षित व्यक्ति का अलग सम्मान व प्रतिष्ठा होती है जो अन्य लोगों को भी अपने विचारों व कार्यो से लाभान्वित करती हैं। रूपश्री गुण्डाला एवं विजय के. छावा ने Effect of life style, Education and Socio Economics status on predental Health नामक अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षा का स्तर व्यक्ति की जीवन शैली व स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है। शिक्षित व्यक्ति अपने स्वास्थ्य, परिवार, समाज, व्यवसाय सभी के प्रति सजग रहते हैं। Higher the Education, better the lifestyle नामक लेख में यह अंकित किया गया कि कॉलेज ग्रेजुएट की उम्र औसतन हाई स्कूल करने वालों की तुलना में 5 वर्ष अधिक होती है (U.S.Census Bureau)। शिक्षा बालक के संज्ञानात्मक, प्रभावात्मक व मनोगत्यात्मक पक्षों का विकास करती है। किशोर शिक्षा द्वारा सामाजिक, शारीरिक, व्यवसायिक ज्ञान प्राप्त करते है जिससे उनको सामंजस्य में सरलता होती है। सही गलत निर्णय शिक्षा द्वारा ही निर्धारित किए जा सकते है। यही वह समय होता है जब वे आस–पास के वातावरण से सबसे अधिक प्रभावित होते है या कहा जा सकता है कि यह भ्रमित होने की अवस्था है। इस समय वे परिवार की जीवन शैली से अधिक बाहरी वातावरण की जीवन शैली से अधिक प्रभावित होते हैं।

किशोरों के जीवन में वे आदतें जो पहले विशेष अवसरों पर अवलोकित होती थी अब रोजमर्रा की जीवनशैली में नजर आती है जैसे खान–पान सम्बन्धी आदतों में परिवर्तन होना आम बात है। जहाँ पहले घर के पोष्टिक भोजन को ही खान–पान में सम्मिलित किया जाता था अब इसकी जगह संरक्षित या पैक्ड भोजन, सोफ्टड्रिंक तथा फास्ट फूड ने ले लिया है जिनको किशोर अपनी दैनिक आदतों में शामिल कर रहे हैं। शहरों में मैक.डी., डोमिनोज, पीजा हट, कॉफी–कैफे आदि पोष्टिक भोजन प्रदान न करने के बाद भी चलन में है। इसी प्रकार किशोरों के रहन–सहन, पहनावे में भी हस्तांतरण देखा जा सकता है। स्थानीय वस्त्रों का स्थान अन्तर्राष्ट्रीय तथा पश्चिमी पहनावे ले रहे हैं। जीन्स, टी शर्ट, कट स्लिव, गाउन, स्कर्ट, मिनी ड्रेस आदि फैशन माने जाने लगे है। उच्च वर्ग के किशोरों में घर देर से आना एक प्रकार से उच्चता का प्रतीक माना जाने लगा है। जहाँ पहले सैर–सपाटे या घूमने के लिए प्राकृतिक स्थलों पर परिवार सहित जाने का चलन था वहीं अब ऐसा लगता है कि यह नाईट क्लब, मॉल, रेस्टोरेंट तक ही सीमित हो रही है। यहाँ तक कि अब खरीददारी करना भी आधुनिकता का प्रतीक माना जाने लगा है। अब यह प्रक्रिया दुकानों की बजाय ऑन लाइन आर्डर के माध्यम से होने लगी है। जिससे किशोरों द्वारा इन्टरनेट का और अधिक प्रयोग किया जा रहा है। वर्तमान में युवाओं में मित्रता करने का भी रूप परिवर्तन हुआ है अर्थात् लड़का व लड़की में मित्रता होना आम हो रहा है। ये सम्बन्ध आपसी आकर्षण व आवश्यकता पर आधारित होते है जिससे उनमें विषमलिंगी होने पर भी खुलापन आ गया है। आज युवा अपने स्थायी व्यवसायिक क्षेत्रों के लिए कम चिंतित रहते हैं क्योंकि पहले व्यवसायों के अवसर व क्षेत्र सीमित थे परन्तु अब उनके आगे व्यवसायिक क्षेत्रों के अवसरों की भरमार है। इसी के साथ निजी क्षेत्र में भीउनकी व्यवसायिक आकांक्षायेंबढ़ने लगी है जिससे सरकारी नौकरी का मोह कम हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों की यदि चर्चा करें तो वहां के किशोंरों को भी अध्ययन के लिए बाहर भेजा जाने

लगा है। जिससे ग्रामीण परिवेश की जीवनशैली में भी परिवर्तन महसूस किया जा सकता है। गाँव में भी किशोर जागरूक हो रहे हैं। मोबाइल, इन्टरनेट आदि का उपयोग बढ़ रहा है जिससे ग्रामीण किशोरों का दृष्टिकोण भी शहरी किशोरों की भॉति परिवर्तन के दौरे से गुजर रहा है।

इस प्रकार की जीवन शैली के निर्मित होने से अनेक प्रकार की समस्याएँ भी जन्म ले रही है। लिव इन रिलेशनशिप जैसी विचारधारा का जन्म इन्हीं बदलते परिवेश का परिणाम है। विषमलिंगीय मित्रता का चलन बढ़ने से अनचाहे गर्भ ठहरने जैसी समस्याएँ सामने आ रही है जिससे धमकी देना, सामूहिक बलात्कार की संख्या में बढ़ौतरी हो रही है। पाश्चत्य खान–पान की शैली से स्वास्थ्य स्तर गिर रहा है। कुल रूप से देखा जाए तो कही न कहीं भारतीय संस्कृति को ठेस पहुँच रही है जो हमारी अभी तक पहचान बनी हुई है।

अतः जीवनशैली के संदर्भ में कुछ प्रश्न उभर कर सामने आते हैं जिनका अध्ययन किया जा सकता है–

–क्या युवाओं की बदलती जीवन शैली(जो संस्कृति के विपरीत है), भारतीय शिक्षा की कमी का परिणाम है?
–सरकार द्वारा विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित की गई नीतियाँ युवाओंकीजीवनशैलीकोबदलनेमें कितनी कार्यशील है?
–बदलते परिवेश में शिक्षकों की जीवनशैली के साथ–साथ उनके मूल्य भी परिवर्तित हो रहे हैं। इस स्थिति में शिक्षकों को उपयुक्त प्रकार की जीवन शैली कोअपनानेके लिए कैसे प्रशिक्षित किया जाए?
–भारतीय संस्कृति को बनाये रखने हेतु जिन व्यवहार/आचरण की आवश्यकता है उन्हें विद्यार्थियों की जीवनशैली में कैसे सम्मिलित किया जाए?

United Nations Population Funds (UNFPA) के अनुसार, भारत में अन्य देशों की तुलना में सर्वाधिक युवा शक्ति है। 2001 में भारत में युवाओं की संख्या 353 मिलियन थी जो कि 2011 में बढ़कर 430 मिलियन हो गई (The Hindu, 18 Nov. 2014) । जिनमें भारत के भविष्य को बेहतर से भी बेहतर बनाने की भरपूर क्षमता है। UNFPAके निर्देशक डॉ. बाबाटुंडे ओसोटाइमहिम ने भी कहा ''युवा भविष्य के अन्वेषकएनिर्माणकएरचयिता एवं नेताहोते है परन्तु वे भविष्य को तभी बेहतर बना सकते है जब उनके पास उपयुक्त कौशल, उत्तम स्वास्थ्य, निर्णय लेने की सही क्षमता एवं जीवन में चुनाव करने के बेहतर अवसर उपलब्ध हो। अगले दस वर्षों में भारत युवा शक्ति का केन्द्र रहेगा। अतः युवाओं को सर्वोपरि रखकर समाज जीवनशैली सुदृढ़ बनाने में उपयोग किया जा सकता है इसके लिए उनकी जीवनशैली को समझनाववांछितपरिवर्तितकरनाअध्ययन का केन्द्र होना चाहिए।

अतः यह आवश्यकता अत्यन्त प्रबल है कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था में युवा शक्ति के महत्व को पहचानते हुएयुवाओं की जीवन शैली से सम्बन्धित अध्ययनों को प्रमुखता दी जाय।

## *संदर्भ सूची–*


1.वानी, एम एवं लक्ष्मी डी. (2013), ''अ क्रॉसकल्चरल स्टडी ऑफ लाइफस्टाइल ऑफ कालेज स्टूडेंट्स'', जरनल ऑफ कम्यूनिटी गाइडैंस एण्ड रिसर्च, वाल्यूम 30(2)।

2.त्यागी, दीपाली (2012), ''फिलोसॉफी इमेंटिंग फ्रोम दी लाइफ स्टाइल ऑफ स्टूडेण्ट्स ऑफ हायर इंस्टीट्यूशन्स'', शोध प्रबन्ध, वनस्थली विद्यापीठ।

3.डॉ. सेठी राजेश (2015), ''अंतवैयक्तिक क्षमता एवं संप्रेषण क्षमता'' विद्या प्रकाशन मंदिर लिमिटेड, नई दिल्ली।

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org